ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 48 कुल पृष्ठ-8 ९ से 15 अगस्त, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 भा.कृ.-06

श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह)

हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें

भारी संख्या में युवाओं को अपने कार्यक्रमों में लाने का प्रयास करें

– स्वामी आर्यवेश

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियां में प्राथमिक महत्व रखते हैं। इस वर्ष 26 अगस्त, 2018 को रक्षा बन्धन तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 3 सितम्बर, 2018 को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यो का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यो को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गो जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिएं जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा

उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षों को लगाने का भी आह्वान किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

3 सितम्बर, 2018 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा भगवान श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे भगवान श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो। सार्वदेशिक सभा ने वेदों को जन-जन के हाथों में, प्रत्येक परिवार में, पुस्तकालयों में, विद्यालयों तथा कालेजों की लाइब्रेरियों में पहुंचाने का संकल्प लेकर सस्ते मूल्य पर देने का निश्चय किया है। इस वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के पास वेद पहुंचाने का यत्न करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को भी प्रेरित करें कि वे इस योजना का लाभ उठायें। अधिक से अधिक संख्या में आदेश भेजकर वेदों को अपने घर में लाकर उसे पवित्र करें और प्रतिदिन वेदों के स्वाध्याय का व्रत लें।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र "वैदिक सार्वदेशिक" के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। "वैदिक सार्वदेशिक" का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

योगक्षेमो नः कल्पताम्

– प्रो. ओम कुमार आर्य

उपर्युक्त मंत्रांश यजुर्वेद 22/22 के उस प्रसिद्ध मंत्र से उद्धृत किया गया है जो हमारी वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना है। वैदिक राष्ट्रगान है। इस पूरे मन्त्र का काव्यानुवाद करते हुए उक्त अंश का बहुत सुन्दर भावानुवाद यूँ किया गया है कि –

हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।

यहाँ 'योग' शब्द अध्यात्म का पुट लिये हुए है कि हम आध्यात्मिक रूप में भी सुखी हों, सम्पन्न हों और 'क्षेम' अर्थात् सभी प्रकार की भौतिक सुख–सम्पदा, सुरक्षादि भी हमें सदैव प्राप्त रहे। वेद का राष्ट्र विषयक चिन्तन, राष्ट्र सम्बन्धी अवधारणा, परिकल्पना एकांगी न होकर समग्र और सर्वांगी है। वैदिक राष्ट्रवाद के अन्तर्गत प्रजाजनों के लिए मात्र रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता ही नहीं की गई प्रत्युत उनके लिए धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास और उन्नति की भी समुचित व्यवस्था की गई है। वेद राष्ट्र को मात्र एक प्रभुतासम्पन्न भौगोलिक इकाई ही नहीं मानता, इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ राष्ट्र की वैदिक अवधारणा में है, वेद द्वारा प्रतिपादित 'राष्ट्रवाद' की परिकल्पना में है।

वैदिक धर्म में राष्ट्र, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय भावना आदि को इतना महत्त्व दिया गया है कि वैदिक मान्यताओं के अनुसार चलने वाला व्यक्ति कभी भी राष्ट्र विरोधी कोई कुकृत्य कर ही नहीं सकता। वैदिक राष्ट्रवाद की जड़ें बहुत गहरी है, आज का स्वार्थान्ध, सत्तालोलुप, तथाकथित सैक्युलरवाद की दलदल में धंसा राजनेता (?) वोट बैंक की घटिया राजनीति करने वाला कोई भी दल कभी कल्पना भी नहीं कर सकता कि वेद का राष्ट्रवाद कितना उदात्त, कितना पवित्र, कितना उदार और 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना से परिपूर्ण हो सकता है। इसलिए यह अत्यन्त सहज और स्वाभाविक ही है कि वैदिक विचारधारा मातृभूमि के प्रति अगाध आदर एवं आस्था तथा सार्वजनिक हित की भावना से पूरी तरह ओत–प्रोत है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की पावन भावना अन्यत्र दुर्लभ है।

वैदिक धर्म में राष्ट्र, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय भावना आदि को इतना महत्त्व दिया गया है कि वैदिक मान्यताओं के अनुसार चलने वाला व्यक्ति कभी भी राष्ट्र विरोधी कोई कुकृत्य कर ही नहीं सकता। वैदिक राष्ट्रवाद की जड़ें बहुत गहरी है, आज का स्वार्थान्ध, सत्तालोलुप, तथाकथित सैक्युलरवाद की दलदल में धंसा राजनेता (?) वोट बैंक की घटिया राजनीति करने वाला कोई भी दल कभी कल्पना भी नहीं कर सकता कि वेद का राष्ट्रवाद कितना उदात्त, कितना पवित्र, कितना उदार और 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना से परिपूर्ण हो सकता है। इसलिए यह अत्यन्त सहज और स्वाभाविक ही है कि वैदिक विचारधारा मातृभूमि के प्रति अगाध आदर एवं आस्था तथा सार्वजनिक हित की भावना से पूरी तरह ओत–प्रोत है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की पावन भावना अन्यत्र दुर्लभ है।

आज अपने 72वें स्वतंत्रता दिवस के शुभावसर पर ये सब बातें अन्य देशवासियों और विशेषकर नई पीढ़ी को बताना नितान्त आवश्यक है। 'योगक्षेमो नः कल्पताम्' अर्थात् हमारी स्वाधीनता चिरस्थायी हो, हमारी सुरक्षा को कभी कोई आंच न आवे, सभी प्रजाजन परस्पर प्रेमभाव से रहें, फूलें–फलें, ज्ञान–विज्ञान में हम उन्नत होवें, दिग्दिगन्त में हमारी यश–दुन्दुभि बजती रहे आदि–आदि, यही वैदिक राष्ट्रवाद है, यही आदर्श राम राज्य है।

वैदिक राष्ट्रवाद को ठीक से समझना हो तो हमें अथर्ववेद का 'पृथिवी/भूमि सूक्त' बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए, जो कि 'द्वादश काण्ड' का प्रथम सूक्त है जिसमें 63 मंत्र हैं। दूसरे शब्दों में 'अथर्व 12/1 मंत्र 1–63' राष्ट्रवाद को डिंडिम घोष कहा जा सकता है। आज के संदर्भ में तो उक्त वैदिक सूक्त अत्यधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि आज हम सुरक्षा के बाहरी एवं भीतरी खतरों से जूझ रहे हैं, भ्रष्टाचार एक भयंकर राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है, घपले, घोटाले, स्कैण्डल, काण्ड ये सब रोज–रोज की बातें हो गई हैं, क्षेत्रवाद, जातिवाद, अलगाववाद आदि की दुष्प्रवृत्ति इतनी प्रबल और बेकाबू हो चुकी है कि हमारा अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। इन सबका और इन जैसी अन्य सभी समस्याओं का समाधान यदि कहीं है तो वेद में है, वेद द्वारा बताये गये राष्ट्रवाद के उच्चादर्श में है, और वेद के किसी एक सूक्त के कुछ मंत्रों में देखना हो तो उपर्युक्त 'पृथिवी सूक्त' अर्थात् अथर्ववेद 12/1 मंत्र 1–63 में है।

'योगक्षेमो नः कल्पताम्' अर्थात् हमारी स्वाधीनता हम सबके लिए सुखदाई हो, यह कामना तो वैदिक राष्ट्रवाद का मात्र एक आयाम है, इसके अतिरिक्त इस पूरी राष्ट्रीय प्रार्थना में (यजु. 22/22) अनेक अन्य ऐसी कामनायें हैं जो राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग के प्रजाजनों, हमारे पशुओं, फल–फूल औषधियों (समस्त पर्यावरण), आवश्यकतानुसार वृष्टि आदि से सम्बन्धित हैं, अर्थात् सबकी समान सर्वांगीण उन्नति, बिकास, हित–सम्पादन वैदिक राष्ट्रवाद की मूल भावना है जो वर्तमान में विलुप्त प्रायः होती जा रही है जो कि राष्ट्रवासियों के लिए एक बेहद दुःखद एवं अशुभ संकेत है।

हम अपना 72वाँ स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से, सोत्साह एवं सोल्लास मनायें, किन्तु यह न भूलें कि चन्द जगमगाते नगरों अथवा 20–25 प्रतिशत खाते–पीते, सुविधा सम्पन्न, धन कुबेरों का नाम ही देश नहीं है। वे 70–75 प्रतिशत अभावग्रस्त एवं अभागे प्रजाजन भी इसी देश के नागरिक हैं जो बड़ी मुश्किल से अपने लिये दो वक्त की रूखी, सूखी रोटी का जुगाड़ कर पा रहे हैं। वैदिक राष्ट्रवाद में निहित भावना को हमने अपनाया होता तो इतनी भयंकर विषमता का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। विचारकों ने राष्ट्र के जो ये तीन घटक माने हैं – (1) भूमि, (2) भूमि पर बसने वाले जन और (3) जन की संस्कृति।

ये तीनों राष्ट्र की वैदिक मान्यता के पर्याप्तरूपेण अनुरूप हैं। इसलिए एक प्रभुता सम्पन्न, स्वतंत्र देश में इन तीनों की सुरक्षा और भलाई पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। इनकी 'स्वस्ति' (भलाई) ही राष्ट्रीय सुव्यवस्था (शांति) का एकमात्र सुदृढ़ आधार है। द्रष्टव्य है कि यज्ञ के मंत्रों में महर्षि ने 'स्वस्तिवाचनम्' को पहले रखा है और तत्पश्चात् 'शांतिकरणम्' को। इससे हमें महर्षि की बहुत ही सुलझी हुई, युक्ति युक्त और वैज्ञानिक सोच का भी परिचय मिलता है।

वेद–ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है, पूर्ण है, अखण्ड है और चारों वेदों में कहीं भी विरोधाभास या अन्तर्विरोध नहीं है। जो बातें राष्ट्रीय प्रार्थना (यजु. 22/22) में हैं उन्हीं का पूरा समर्थन और पुष्टि अथर्ववेद के 'पृथिवी सूक्त' (अथर्व 12/1/1–63) में है और उन्हीं पर पूरा और ऋग्वेद के इस मंत्र में है –

ओं इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः। ऋ. 1/13/9

इसी प्रकार के सर्वहितकारी, प्रखर राष्ट्रवाद का प्रतिपादन इन मंत्रों में भी है –

ओं सरस्वती साधयन्ति धियं न इळा देवी भारती विश्वतूतिः।

तिस्त्रो देवीः स्वधया............।। ऋ. 2/3/8

तथा

ओं आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा। ऋ. 3/4/8, 7/2/8

इन मंत्रों में 'इला' शब्द मातृभाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है, 'सरस्वती' अपनी संस्कृति के लिए तथा 'मही' मातृभूमि के लिए। इनका संकेत बाद के चिंतन पर आधारित राष्ट्र के इन तीन घटकों की ओर ही है, या यूं कहें कि इन घटकों –

भूमि, जन और जन की संस्कृति का आधार ये उक्त वेद मंत्र ही है।

अतः आज स्वतंत्र भारत के कर्णधारों को चाहिए कि वे वेद के राष्ट्र, राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम विषयक चिन्तन को नई पीढ़ी की शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करें, न केवल शामिल करें बल्कि हम सभी इस विचारधारा को अपने व्यवहार में अपनायें। यदि हम भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने की मंशा रखते हैं, यदि हम दलगत राजनीति की दलदल से बाहर निकलकर वास्तव में सबका भला चाहते हैं, यदि हम आरक्षण की मूल भावना के अनुरूप इसे वोट बैंक से जोड़कर नहीं देखना चाहते, छद्म सैक्युलरवाद का सहारा लेकर विभिन्न वर्गों को साम्प्रदायिक, गैर–साम्प्रदायिक आदि खेमों में नहीं बांटना चाहते, सरहदों की पुख्ता सुरक्षा चाहते हैं, और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यदि हम अपने प्रजातंत्र को फूलता, फलता देखना चाहते हैं, इसका भविष्य उज्ज्वल चाहते हैं तो हमें तुरन्त विदेशों से आयातित राष्ट्र विषयक विचारधारा, तदनुरूप प्रत्यक्ष व्यवहार, उन्हीं से प्रभावित अपनी रीति–नीति तुरन्त त्यागनी होगी और अपनी स्वदेशी, वेद प्रतिपादित राष्ट्र विषयक विचारधारा को अपनाना होगा, इसी में हम सबका भला है, प्रजातंत्र के उज्ज्वल भविष्य की भी इसी में गारण्टी निहित है, और यह भी तय है कि हम वास्तव में ही एक महाशक्ति बनकर विश्व में अपने गौरव का परचम लहरा पायेंगे, पुनः जगत् गुरु बनकर शेष विश्व का मार्गदर्शन कर सकेंगे तथा महर्षि मनु की इस ऐतिहासिक घोषणा को दोहरा सकेंगे –

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

यह तभी होगा जब हम 'माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' की पावन भावना से ओत–प्रोत राष्ट्रवाद को सर्वतोभावेन अपनायेंगे और यह मानकर चलेंगे कि –

राष्ट्र नाम नहीं है केवल भूमि, पर्वत, नदियों का या कि फिर मनुष्य, पशु, पंछी, खेत, खलिहान, वनस्पतियों का इनसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ घटक और भी होते हैं, जिन्हें विचारक धर्म, संस्कृति, निज भाषादि कहते हैं। इन सबका समुच्चय, समवेत स्वरूप ही राष्ट्र कहलाता है। वैदिक राष्ट्रवाद इन सबसे प्यार करना सिखलाता है। प्रजाजनों का मातृभूमि से माँ बेटे का नाता है। वैदिक राष्ट्रवाद यही है यूँ वेद साफ बतलाता है।

– 1607/7, जवाहरनगर, पटियाला चौक, जीन्द–126202 (हरियाणा)
मो.:–9416294347, 01681–226147

आजादी के सातवें दशक तक दिशाहीन शिक्षा ही क्यों?

- साकेन्द्र प्रताप वर्मा

भारत का तमाम प्राचीन ज्ञान वेद, उपनिषद्, पुराण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में छिपा है, जिसे जानने के लिए संस्कृत का ज्ञान जरूरी है। हमारा दुर्भाग्य है कि मथुरा व काशी में विदेशी छात्र भले ही सिर मुंडवाकर संस्कृत का ज्ञान अर्जित करने के प्रयास में जुटे हों किन्तु भारत में ऐसी हवा फैला दी गई है कि संस्कृत तो केवल पूजापाठ की भाषा है। इस हवा को फैलाने में बड़े-बड़े लोग सम्मिलित हैं। अभी कुछ दिन पहले उ. प्र. के राज्यपाल थे टी. वी. राजेश्वर। वे कुलाधिपति के रूप में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गये। वहां उन्होंने संस्कृत के विद्वानों से संबोधन में कहा कि संस्कृत पढ़ने का अर्थ बैलगाड़ी युग में जीना। इसलिए यदि प्रगति करनी है तो अंग्रेजी पढ़ना जरूरी है। इतना सुनते ही वहाँ उपस्थित छात्र भड़क गये और राज्यपाल पर कुर्सियाँ फेंकनी शुरू कर दी। किसी तरह राज्यपाल पुलिस की सुरक्षा में जान बचाकर भागे। भारत में यही ज्ञान सोनिया गांधी के चहेते तथा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने भी परोसते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा से अंग्रेजी अनिवार्य कर देनी चाहिए। अमेरिका के प्रसिद्ध इतिहासकार बिलड्यूरान्ट ने लिखा है कि ***India is the mother of our race and Sanskrit is the mother of India & European languages, it is mother of us all*** अमेरिका के इतिहासकार को संस्कृत भाषाओं की जननी दिखाई देती है किन्तु भारत ने इस बात को समझने की कोशिश नहीं की। इटली, जापान, चीन, रूस, जर्मनी आदि महाशक्ति बनने वाले देशों ने अपनी मातृभाषाओं में प्रगति के सारे सोपान पार किये लेकिन भारत न जाने कौन सी मतिभ्रम का शिकार बन गया है कि बिना अंग्रेजी हमारी प्रगति हो ही नहीं सकती।

वैसे तो अंग्रेजों के गुलाम देशों पर यूरो-अमेरिकी बुद्धि का वर्चस्व है, जो उन देशों की शिक्षा व्यवस्था को संचालित करती है। इस बुद्धि पर ईसाइयत का वर्चस्व है। हमें पता है कि सन् 1492 में अमेरिका भी यूरोपीय बुद्धि का शिकार हुआ था जिसकी कुदृष्टि के कारण वहां की सारी विशेषतायें खो गई। यही कारण है कि आज का अमेरिका यूरोपीय बुद्धि से संचालित होता है। भले ही 1992 में अपनी विशेषतायें नष्ट करने के लिए अमेरिका के एक न्यायालय ने पांच सौ साल बाद कोलम्बस को फांसी की सज़ा सुनाकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। आजादी के बाद लगभग यही स्थिति हमारी भी हो गई है इसीलिए हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था भी उसी युरोपीय बुद्धि से संचालित होने लगी जो ईसाइयत के कब्जे में है। विद्वान मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि बालक को जिस भाषा में सपना आता है यदि उसी भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाये तो वह ज्यादा प्रगति कर सकता है। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम कहा करते थे कि मैं वैज्ञानिक इसीलिए बन पाया क्योंकि मेरी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होने से मेरी नींव मजबूत थी। यही बात प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु के पिता भगवान चन्द्र बसु जो ब्रिटिश हुकूमत में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे वे भी कहा करते थे कि अंग्रेजी जानने से पहले मातृभाषा में अपना धरातल मजबूत होना चाहिए। लेकिन स्वतंत्रता के बाद केवल अंग्रेजी पर जोर होने के कारण हम बहुआयामी शिक्षा नहीं दे सके। यहां तक कि रोजगार सृजक शिक्षा देने की तरफ दृष्टि ही नहीं उठाई केवल बेरोजगारों की फौज तैयार करने में जुटे हैं। भारत में जो लोग रोजगार या व्यवसाय में लगे हैं उसमें से केवल 5 प्रतिशत ही प्रशिक्षित हैं जबकि कोरिया में 95 प्रतिशत, जापान में 80 प्रतिशत, जर्मनी में 75 प्रतिशत लोग रोजगार या व्यवसाय में लगे हैं। यहां पर कभी तो यौन शिक्षा के नाम पर युवाओं में नग्नता फैलाने के षड्यन्त्र रचे जाते हैं और कभी सैक्स की उम्र 16 वर्ष करने पर जोर दिया जाता है। कभी विकृत इतिहास पढ़ा कर क्रांतिकारियों को आतंकवादी बताने की कोशिश होती है, कभी आर्य बाहर से आये यह भ्रम फैलाया जाता है। अर्थात् भारत में सभी बाह्य आक्रांता है फिर चाहे मुगल हों, अंग्रेज हों या फिर यहां के राजे रजवाड़े। चन्द्रगुप्त, चाणक्य, पृथ्वीराज, राणाप्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई ही नहीं रामायण, महाभारत तक को भुलाकर भारत की गौरवशाली परम्पराओं के प्रति अविश्वास और उपहास का भाव निर्माण करने की कोशिश की जाती है। वेदों को गड़रियों के गीत के रूप में बताया जाता है। जिससे भारत भूल जाये और इंडिया याद रहे। अर्थात् 1947 के पहले हम क्या थे यह विस्मृत हो जाये। आजादी के बाद शिक्षा व्यवसाय बन गई। चाहे जैसी फीस लो, पढ़ाओ चाहे मत पढ़ाओ। मिड-डे-मिल, छात्रवृत्ति, लैपटाप, ड्रेस बांट दो। अच्छी मेरीट दिलवा दो लेकिन कोई प्रेरक दिशा मत दो। इसी दुरावस्था के चलते प्रथम पंचवर्षीय योजना में शिक्षा पर 7.6 प्रतिशत ही काम हो रहा है। इतनी गंभीरता पूर्वक स्वतंत्रता के बाद हमने शिक्षा के क्षेत्र को दुर्गति में पहुँचाया है?

अगर हम आजादी प्राप्त होने वाले वर्षों से तुलना करें तो 1949 में चीन में 205 विश्वविद्यालय थे, जबकि आज 2000 विश्वविद्यालय हैं। भारत में 1947 में 26 विश्वविद्यालय थे आज 538 हैं जिनमें से 153 में बुनियादी सुविधायें ही नहीं हैं। 26478 अन्य उच्च शिक्षा संस्थान हैं जिनमें से 9875 में बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय आई. आई. एम., आई. आई. टी. तथा एम्स जैसी 100 संस्थायें हैं। अनेक निजी संस्थान तथा डीम्ड विश्वविद्यालय हैं जिनके कोई मानक ही नहीं हैं। इसी के चलते गतवर्ष 2012 में तकनीकी कॉलेजों में लगभग 2.5 लाख सीटों पर कोई प्रवेश लेने के लिए ही तैयार नहीं था। जबकि दूसरी ओर भारत से बड़ी मात्रा में छात्र-छात्रायें यूरोपियन देशों, अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा सिंगापुर में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रतिवर्ष जाते हैं। यह केवल छात्रों के जाने भर का मामला नहीं है इससे खरबों रुपये की विदेशी मुद्रा फीस के रूप में दुनिया के देशों को चली जाती है और हमारी अर्थव्यवस्था मुँह ताकती रहती है। हमारी प्रतिभायें पलायन करके दुनिया के देशों के काम आ रही हैं। लेकिन हमने अपनी शिक्षा व्यवस्था में इन बातों की कोई चिंता नहीं की। 60 करोड़ के युवा भारत में हम प्रतिवर्ष पौने दो करोड़ से ज्यादा छात्रों को उच्च शिक्षा नहीं दे पाते। भारत के संसद सदस्यों की प्राक्कलन समिति तथा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने उच्च शिक्षा के हालात पर चिंता जताई है। दुर्भाग्यवश क्यू. एस. वर्ल्ड रैकिंग (यूनिवर्सिटीज) में विश्व के 200 विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों में भारत का एक भी नहीं है। एशिया के शीर्षस्थ 200 विश्वविद्यालयों में 100 तो चीन और दक्षिण कोरिया के ही हैं। इसमें भी सम्मिलित संस्था के आधार पर भारत पांचवें स्थान पर है। जब दुनिया का हर छठवाँ आदमी हिन्दुस्तान में रहता है तो भी हमारी शिक्षा की दुरावस्था देश को किस दिशा में धकेल रही है?आजादी का सातवां दशक इस सवाल के उत्तर जरूर चाहता है। भारत की प्राथमिक शिक्षा के हालात भी कम चिंताजनक नहीं हैं। थोड़े दिन पहले सन् 2012 में गैर सरकारी संगठन 'प्रथम' ने अपनी ऐनुअल स्टेटस इजूकेशनल रिपोर्ट में कई चौंकाने वाले तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं। पहली कक्षा के 50 प्रतिशत से ज्यादा बच्चे कोई भाषा नहीं जानते। 57 प्रतिशत से ज्यादा बच्चे अंग्रेजी नहीं जानते, जबकि जोर अंग्रेजी पर ही दिया जा रहा है। पांचवी कक्षा के 58.3 प्रतिशत छात्र दूसरी कक्षा की पुस्तक नहीं पढ़ सकते। पांचवी कक्षा के 46.5 प्रतिशत बच्चों को घटाना तथा 75.2 प्रतिशत बच्चों को भाग नहीं आता। इस संगठन की गुणवत्ता परीक्षा में सरकारी स्कूल के 47 प्रतिशत तथा निजी स्कूलों को 40 प्रतिशत बच्चे अनुत्तीर्ण पाये गये। माध्यमिक शिक्षा में ज्ञान का मापन केवल ग्रेडिंग तक सीमित करके बच्चों को ज्ञान विहीन बनाने की दिशा में कदम बढ़ाये गये हैं। यही हालात उच्च माध्यमिक यानि कक्षा 12 में भी पैदा करने की कोशिश जारी है। हम भूल जाते हैं कि भारत तो वह देश था जहां पर निरक्षर कबीर भी महान चिंतक थे। आज हम साक्षर तो बनाने में प्रयास कर रहे हैं किन्तु ज्ञान देने का प्रयास नगण्य है। भारतीय मनीषा के मर्मज्ञ तथा स्वदेश परस्त विद्वानों को शिक्षा की व्यवस्था और नीति निर्धारण में हमने या तो आजादी के बाद लगाया नहीं और अगर लगाया भी तो उनकी कही बातों पर अमल नहीं किया। हमने यह भी नहीं सोचा कि भारत को न समझने तथा भारत की माटी की गंध को न जानने वाले भारत के विकास के लिये युवा पीढ़ी को प्रेरक शिक्षा का मॉडल नहीं प्रस्तुत कर सकते। दुर्भाग्यवश हमने अंग्रेजियत में डूबे मतिभ्रष्ट लोगों के सहारे देश में शैक्षिक दृष्टि से आगे बढ़ाने का प्रयास किया जबकि दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महर्षि अरविन्द द्वारा शिक्षा के सम्बन्ध में कही गई महत्त्वपूर्ण बातों की सदैव अनदेखी की। जिस शिक्षक वर्ग को पारसमणि माना गया, उसे सरकारों ने मजदूर मानने की गलती की। शिक्षक के संदर्भ में प्रख्यात कवि रघुवीर शरण मित्र ने लिखा है -

ऐसा सत्य सिखाना जग को, अनाचार मिट जाये।
मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना, शाश्वत सत्य भूमि पर आये।
तुम भू के भगवान, तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अंतर के माली, तुमसे फूल जिंदगी के खिलते हैं।
मैं भूलूँगा, पर तुम मुझसे, भूलों पर उदास मत होना।
तुम शिक्षक विद्वान, तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।।

परन्तु स्वतंत्रता के बाद ऐसे प्रतिभावान, विद्वान तथा नूतन ज्ञान के सृजनकर्ता शिक्षक और शिक्षाविदों को देश की शिक्षा व्यवस्था के संचालन की जिम्मेदारी नहीं दी गई। शिक्षक को न तो हमने व्यवस्था का जनक बनने दिया और न ही नीतियों का निर्धारिक। हम अपनी युवाशक्ति को लोहे से सोना बनाने की गलत प्रक्रिया में जुटे हैं, इसी कारण आजादी के सातवें दशक में हमारे नेताओं व सरकारों के पास इस बात का उत्तर नहीं है कि भारत महाशक्ति क्यों नहीं बना?

- हिन्दुस्थान समाचार से साभार

राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत – महर्षि दयानन्द सरस्वती

– स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

14 अगस्त, 1947 को रात्रि 12 बजे का समय और पराधीनता के पाश का टूटना और 15 अगस्त, 1947 का प्रारम्भ तथा स्वतंत्रता देवी का देश के प्रांगण में शुभागमन। हिमालय के शिखरों ने अभिनन्दन किया, हिन्द महासागर ने चरण प्रक्षालन किया, अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी ने अपनी तरंगों से अभिषेक किया। सम्पूर्ण जनमानस पुलक उठा। हर्षोल्लास जाग उठा। चारो ओर दिग्दिगंत में स्वागतम् – स्वागतम् का निनाद गूंज उठा। बालक किलक रहे थे। युवक उत्साहित हो रहे थे। वृद्ध आशा और विश्वास भरे अतीत को झांक रहे थे तथा भविष्य के स्वप्न सजा रहे थे। जय–जय के घोषों से सम्पूर्ण देश अभिनन्दन कर रहा था अवतरित स्वतंत्रता देवी का। भारत का राष्ट्रध्वज शान से लहरा रहा था। 'अपने देश में अपना राज' का स्वप्न साकार हुआ।

कितना लम्बा संघर्ष, कितनी लम्बी प्रतीक्षा और कितना त्याग बलिदान करना पड़ा, तब देश को अस्मिता प्राप्त हुई और हमारा मस्तक ऊँचा हुआ। इस स्वातंत्र्य संग्राम की सफलता में जिन महापुरुषों ने जीवन योगदान दिया। जिन्होंने समग्र देश में स्वाधीनता की लहर को उठाने का प्रयास किया और जिन्होंने जनमानस में राष्ट्रीय चेतना प्रज्ज्वलित कर स्वतंत्रता की ज्वाला को जलाया उन महापुरुषों में महर्षि स्वामी दयानन्द का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे नव–जागरण के पुरोधा थे। राष्ट्रचेतना के अग्रदूत थे और स्वतंत्रता संग्राम के दूरदर्शी सेनानी थे। उन्होंने अपनी प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया मोड़ दिया। प्रसुप्त चेतना को जगाया। उनके प्रयास से देश की जड़ता समाप्त हुई। जागृति आई, और भारत का नव–प्रभात अंगड़ाई लेने लगा। महर्षि दयानन्द जी ने गंगा, यमुना, नर्मदा और कावेरी के इस देश के नव–निर्माण के स्वप्न को साकार करने का सफल प्रयास किया।

एक प्रसिद्ध समाज शास्त्री ने लिखा है कि जीवन एक ललकार है, चैलेंज है, आह्वान है। साधारणजन ललकार सुनकर भाग खड़े होते हैं। महापुरुष उसका अदम्य साहस से सामना करते हैं। चैलेंज का जवाब देते हैं। संघर्ष से पीठ नहीं दिखाते। अपितु समस्याओं से जूझकर प्राणों की बाजी लगाकर जमाने को पलट देते हैं। महर्षि जीवन एक लोकोत्तर महापुरुष का जीवन था। आशा, विश्वास से भरा पूरा उत्साह, उमंग से छलछलाता, धैर्य और साहस से जगमगाता, दूरदर्शिता और गहन चिन्तन से लहलहाता उनका जीवन था जिसने देश का कायाकल्प कर दिया।

महर्षि जब कर्म क्षेत्र में अवतरित हुए, चारो ओर ललकार थी। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी दासता का। महर्षि की आत्मा ने निर्णय लिया कि मुझे इस दासता को उखाड़ फेंकना है। उनके समस्त कार्यक्रम, उनकी समस्त विचारधारा और उनके समस्त आन्दोलनों का सार था देश की स्वतंत्रता। प्रवृद्ध तथा पबुद्ध चेतना से ओत–प्रोत एक युवक अन्धविश्वास तथा रुढ़िवादिता के दुष्चक्र से अपने आपको निकालकर सच्चे शिव की खोज के दृढ़ संकल्प को लेकर माया, ममता का त्याग कर निकल पड़ते हैं। अपने संकल्प की पूर्ति हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर जाते हैं, सम्पर्क स्थापित करते हैं और जन–जन को देखने और परखने का उनको अवसर मिलता है। सूक्ष्म तत्त्व की लालसा से सम्पन्न उस युवक के पारदर्शी नेत्र वाह्य परिस्थितियों के अनुभवों के प्रति बन्द रहे हों, यह सम्भव नहीं है। महर्षि ने उस परिभ्रमणकाल में सच्चे शिव को तो नहीं पाया। परन्तु समाज और देश में चारो ओर फैले हुए अशिव के दर्शन उन्होंने अवश्य किये। उन्होंने धर्म और राजनीति के नाम पर फैले हुए अंधविश्वासों को देखा, देश की अशिक्षा, दरिद्रता, पीड़ा, कराहट, चारित्रिक पतन तथा कायरता को देखा। अंग्रेजों के अत्याचार देखे, देश की शारीरिक ही नहीं मानसिक दासता को देखा। उन्होंने देखा कि देश की अस्मिता कहीं खो गई है और देश का जन–आहार, निद्रा, भय, मैथुन में ग्रस्त पशुवत जीवन जी रहा है। इसका कारण उन्होंने माना चार सदी की दासता। और उसकी समाप्ति के लिए उन्होंने अपने को आहूत किया।

पराधीनता की पीड़ा उनके मर्म को चीरती रहती थी। उसकी वेदना उनको व्यग्र बनाती रहती थी। देश की पीड़ा उनकी पीड़ा बन गई थी, परिणामतः उनकी वाणी से निकला प्रत्येक शब्द श्रवणकर्ता के मन में प्रखर राष्ट्र चेतना भर देता था। उनकी लेखनी से अंकित एक–एक शब्द राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूंक देता था। स्वाधीनता के प्रति उनकी तड़प, उनके ग्रन्थों, उनके भाषणों, उनके पत्र व्यवहारों और उनकी प्रार्थनाओं में सर्वत्र दिखाई देती है।

महर्षि घोषणा करते हैं – 'स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है'। हार्दिक पीड़ा से लिखते हैं कि – 'आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, निर्भय, स्वाधीन राज्य नहीं है जो थोड़े से राज्य हैं वे विदेशियों से पदाक्रान्त हैं।' 1873 में इस देश के गर्वनर जनरल लॉर्ड नार्थ ब्रुक से वे निर्भयता पूर्वक कहते हैं कि – 'मैं तो सायं प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासदा से शीघ्र मुक्त करें।' अदीनाः स्याम शरदः शतम् को विनियुक्त कर महर्षि ने जन–जन में स्वतंत्रता के प्रेम को जागृत करने का अभिनव प्रयोग किया।

1857 का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम उन्होंने देखा ही नहीं था अपितु तथ्य उद्घाटित करते हैं कि राष्ट्रभक्त दयानन्द उस चिंगारी को प्रज्ज्वलित करने में संलग्न रहे और उस संग्राम का उन्होंने नेतृत्व किया था। प्रयास विफल हुआ। अंग्रेजों ने अमानुशिक अत्याचार किये, भय और आतंक का राज्य छा गया। हताशा के इस वातावरण में महर्षि को सान्निध्य मिला प्रज्ञा चक्षु विरजानन्द जी का और उनके उन गुरुवर ने उनको मांज कर निखार दिया। कुन्दन बना दिया और महर्षि देश का सर्वांगीण कायाकल्प करने हेतु एक नवीन तेजस्विता और दृढ़ संकल्पशीलता के साथ कार्यक्षेत्र में उतर पड़े। अंग्रेजों के अत्याचारों ने राष्ट्र की चेतना को निर्ममता से कुचल दिया था। राष्ट्रभक्ति की भावना को क्रूरता पूर्वक दबा दिया था। हताशा, निराशा और उत्साहहीनता के इस माहौल में उन्होंने अपनी वाणी और लेखनी के माध्यम से भारत महिमा का, आत्म–गौरव का बखान किया और स्वदेश भक्ति का पाठ पढ़ाया। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य की प्रार्थनाएँ की और गौरवमय अतीत का स्मरण कराया। इस प्रकार उन्होंने कुचली चेतना को जगाने का सफल प्रयास किया।

महर्षि के अंग–अंग में राष्ट्रीयता जगमगा रही थी, उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अन्तिम लक्ष्य स्वाधीनता ही था। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के वे स्वप्न देखा करते थे। इसी राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने आर्य समाज तथा अपने भक्तों में भरा था। उस समय का प्रत्येक आर्य राष्ट्रभक्ति का जलता हुआ अंगारा था। इसीलिए एक प्रसिद्ध अंग्रेज ने कहा था कि – 'किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरचकर देखो तो वहाँ क्रांतिकारी दयानन्द लिखा होगा।' उन्होंने एक ऐसी जीवन पद्धति दी जिसमें से निकला व्यक्ति आत्मसंयमी, दृढ़निश्चयी, प्रखर देशभक्ति से भरा हुआ और –'माँ प्रगाम यथो वयम्' की भावना से युक्त होता था। राष्ट्रे वयम् जागृयाम् की प्रबल आकांक्षा उसमें होती थी।

राष्ट्रीय क्रांति, सामाजिक क्रांति, राजनीतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति महर्षि का तेज सबको गति दे रहा था। राष्ट्रीय जागरण के सभी स्तरों की पृष्ठभूमि उन्होंने दृढ़ता से निर्मित की थी। महर्षि चतुर्मुखी जागरण के आद्य प्रवर्तक थे। लोकसभा के अध्यक्ष रहे श्री अनन्त शयनम अयंगर ने कहा था कि 'गाँधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे।' उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज आन्दोलन था जो उनकी प्रेरणा के अनुसार धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को लेकर चला। प्रत्येक आर्य समाज एक ऐसा स्वतंत्रता केन्द्र था जहाँ शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक रूप से सबल, सशक्त, संकल्पयुक्त, देशभक्त निर्मित होते थे जो रुकना, झुकना नहीं जानते थे और स्वतंत्रता यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। महर्षि के निर्देशित पथ के पथिक बनकर आज भी हम स्वराज्य को सुराज में परिणित कर सकते हैं जिसकी आज महती आवश्यकता है।

– आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तथा मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने राजस्थान के कई स्थानों पर कार्यक्रमों में भाग लेकर युवाओं का किया उत्साहवर्द्धन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री हरदेव आर्य ने बताया कि आर्य समाज संगठन को मजबूत करने के लिए ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने स्थानीय कार्यकर्ताओ के साथ बैठक के अतिरिक्त, आर्य समाज सुमेरपुर, चेतन विद्यामंदिर, सुमेरपुर, काना कोलर में भी आर्य कार्यकर्ताओ के साथ भी बैठक की। आगमी दिनों में युवाओं के आध्यत्मिक व योग शिविरों का आयोजन के लिए काम्बेश्वर जी स्थित धर्मशालाओं का अवलोकन भी किया। ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये गये कार्यक्रमों में भारी संख्या में उपस्थित आर्यजनों के मध्य अपने विचार प्रकट किये।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने आजादी के लिए जीवन पर्यन्त प्रयास किया

मिशन आर्यावर्त के निदेशक एवं हरियाणा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेश अध्यक्ष ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने आजादी के लिए जीवन पर्यंत प्रयास किया। ताकि वैदिक संस्कृति की पुनः स्थापना हो सके।

उन्होंने यह बात बुधवार को आर्य हनुमान व्यायामशाला में तीनों शाखाओं के आर्य वीरों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि आजादी के आंदोलन में आर्य समाज ने प्रमुखता से अपना अहम रोल अदा किया। जिसकी बदौलत आजादी मिली। शहीद ऊधमसिंह के बचपन से प्राप्त संस्कारों के कारण ही उन्होंने डायर का वध किया था। यह ज्वाला उसके संस्कारों में थी। आर्य वीर दल के अध्यक्ष कृष्ण कुमार ने आर्य वीर दल की नियमित गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यहां से निकले कई वीरों ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर नाम रोशन किया है। संचालक प्रशांत सिंह ने सभी का आभार जताते हुए आर्य वीर दल शाखा में बालक बालिकाओं को भेजने का आह्वान किया।

संचालन आर्य समाज लालपोल के प्रधान विनोद आर्य ने किया। उन्होंने आर्य वीर दल की संगठनात्मक बैठक को भी संबोधित किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान दलपत सिंह आर्य, आर्य समाज लालपोल के प्रधान विनोद आर्य, संगठन मंत्री कांतिलाल, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मंत्री हरदेवआर्य, आर्य वीर दल शिवगंज के संचालक पुरुषोत्तम आर्य, आर्य समाज शिवगंज के मंत्री गुणवंत आर्य, शाखानायक कन्हैयालाल मिश्रा, गणपत आर्य, पार्षद फूलाराम प्रजापत, पूर्व पार्षद जगदीश आर्य, भागीरथ गर्ग, मोहन लाल भादरू, छगननाथ सहित बड़ी संख्या में आर्य वीर उपस्थित थे। ब्र. दीक्षेन्द्र जी का विभिन्न स्थानों पर स्वागत किया गया। सुभाष व्यायाम शाला में लोगों को संबोधित करते हुए युवाओं को नशे से दूर रहने की नसीहत दी। अच्छे संस्कारो को अपनाने को कहा। इस मौके पर आर्य वीर दल के महामंत्री शिवदत्त आर्य, अम्बिका प्रसाद तिवारी, पार्षद भरत मेघवाल कई आर्य वीर उपस्थित थे।

राम को मंदिर में बसाने की नहीं बल्कि आवश्यकता मन में बसाने की है

1 अगस्त 2018(शिवगंज): श्रीराम को मंदिर में बसाने की नही बल्कि मन में बसाने की आवश्यकता है। ये वाक्य मिशन आर्यवर्त्त के निदेशक व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य ने आर्य समाज शिवगंज में कार्यकार्यताओं को संबोधित करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि आजकल राजनीतिक पार्टियां श्री राम को मंदिर में बसाने के लिए ताकत लगा रही हैं। इसके लिए समाज में आपसी तनाव भी बनता है। आज आवश्यकता है श्री राम को मन मे बसाने की। उनकी मर्यादाओं को व जीवनशैली को यदि हम अपने जीवन में उतारते हैं तो एक सुंदर व स्वच्छ समाज की स्थापना की जा सकती है। यदि आज समाज मे श्री राम की मान्यताओं को लागू किया गया होता तो समाज में वृद्धाश्रम बनाने की जरूरत नही पड़ती। माता पिता की सेवा, भाई भाई में प्रेम, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, दलित व गरीबों को गले लगाना ये मर्यादापुरुषोत्तम श्रीमान के जीवन से सीखने को मिलता है। इन्हीं मान्यताओं को आर्य समाज मानता है व प्रचारित भी करता है।

दीक्षेन्द्र आर्य सहित कई गणमान्य महानुभावों ने हरदेव आर्य के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ के पश्चात शुभकामनाएं दी।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में सहयोग के लिए आभार जताया

6,7,8 जुलाई 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में विश्व इतिहास में पहली बार आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के सफल आयोजन में आर्य वीर दल शिवगंज व आर्य समाज शिवगंज के कार्यकार्यताओं का दीक्षेन्द्र आर्य ने आभार जताया और कहा कि आपका आर्थिक सहयोग व कार्यकर्ताओं की उपस्थित ने महासम्मलेन की सफल बना दिया।

पंचायत समिति शिवगंज के प्रधान जीवा राम आर्य से भेंट

आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान व युवा निर्माण अभियान की प्रमुख गतिविधियों को ओर तेज करने के उद्देश्य से व पंचायत समिति के सहयोग से और तेज करने के लिए एक शिष्टाचार भेंट जीवा राम आर्य से उनके कार्यालय में की। उन्होंने आर्यों के साथ समाज में तेजी से बढ़ रहे नशे से बचाने व महिलाओं के प्रति सम्मान को बढ़ाने के लिए विचार विमर्श भी किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान मदन आर्य,जितेंद्र सिंह,पुरुषोत्तम सुथार,अरुण आर्य,जीवा राम आर्य, फूलाराम सुथार, केशव देव शर्मा, गेना राम प्रजापत, सुरेश आर्य, सुरेश दत्ता, ओमप्रकाश आर्य,कपूर चंद सुथार, प्रदीप गहलोत,हरदेव आर्य(वरिष्ठ), गोबिंद राम, नवरत्न आर्य,आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज शिवगंज में कार्यक्रम का आयोजन

युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं, वे उसके भावी निर्माता हैं। चाहे वह नेता या शासक के रूप में हों, चाहे डाक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार व कलाकार के रूप में हों। इन सभी रूपों में उनके ऊपर अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला एवम् ज्ञान की परम्पराओं को मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे ले जाने का गहरा दायित्व होता है। पर इसके विपरीत अगर वही युवा वर्ग उन परम्परागत विरासतों का वाहक बनने से इन्कार कर दे तो निश्चिततः किसी भी राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। इन युवाओ को शिक्षक ही उचित दिशा दे सकते हैं। ये शब्द सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान व मिशन आर्यवर्त्त के निदेशक दीक्षेन्द्र आर्य ने आर्य समाज शिवगंज में आयोजित कर्यक्रम में शिक्षकों व युवाओं को संबोधित करते हुए कहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मंत्री हरदेव आर्य ने बताया कि युवाओं को चरित्रवान व राष्ट्र भक्त बनाने के लिए आर्य समाज निरन्तर प्रयासरत है।

इस से पहले आर्य समाज के अधिकारियों ने दीक्षेन्द्र आर्य का फूल मालाओं से स्वागत किया।

स्वामी चेतनानंद वेदाश्रम की ओर से आर्य वीरदल की स्थानीय इकाई को व्यायामशाला के लिए जिम का सामान उपलब्ध करवाया गया

स्वामी चेतनानंद वेदाश्रम की ओर से आर्य वीर दल की स्थानीय इकाई को व्यायामशाला के लिए जिम का सामान उपलब्ध करवाया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य स्वरूप सिंह राणावत, कमलेश शर्मा, देवीलाल सैन, विजय सुथार, सागर गर्ग,सरिता सागर, सागर डाबी, सविता मारू, रिंकू सुथार आदि उपस्थित रहे।

हरदेव आर्य, मदन आर्य प्रधान, गुणवंत माली,मंत्री,आर्य वीर दल शिवगंज से पुरुषोत्तम सुथार, सुरेश आर्य,प्रदीप गहलोत,सागर दत्ता आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में भरपूर सहयोग प्रदान किया।

आर्य बाल विद्या मंदिर में निशाने बाजी की तैयारियों के लिए नई विंग शुरू

शिवगंज स्थित आर्य बाल विद्या मंदिर में छात्र व छात्राओं के लिए निशाने बाजी के लिये 5 नए राइफल चेतनानंद वेदाश्रम ट्रष्ट के प्रधान हरदेव आर्य द्वारा प्रदान किये गये। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान व मिशन आर्यवर्त्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि आज देश मे खेलों के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ा है यह अच्छे संकेत हैं परन्तु युवा खेलों को सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए ही नहीं बल्कि अपने कैरियर के रूप में चुनें। क्योंकि आज भारत में फ़िल्मी हीरो से ज्यादा खिलाडियों को सम्मान मिलना प्रारम्भ हो गया है।ये अपने आप में गौरव की बात है। जब कोई खिलाडी अपने देश के लिये खेलता है वो समय उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लम्हा होता है। उन्होंने छात्रों को आगे बढ़ने के टिप्स भी दिए। उन्होंने कहा कि कोई भी प्रतियोगिता सिर्फ ताकत के बल पर ही नहीं टेक्निक व बुद्धि के बल पर जीती जाती है।

हरदेव आर्य ने कहा कि आर्य समाज व आर्य वीर दल क्षेत्र के युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक सुविधा देने का प्रयास कर रही है ताकि देश के लिए निष्ठावान नागरिक तैयार किये जा सकें।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान मदन सिंह आर्य, मंत्री गुणवंत माली, पुरुषोत्तम सुथार आदि महानुभाव उपस्थित थे।

राष्ट्र के कर्णधार युवा

–आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

आँखों में भविष्य की कल्पनाएँ बाजुओं में नवीन रुधिर से भरी ऊर्जा, मुट्ठियों में काल के प्रवाह को रोक देने की क्षमता, तनी भृकुटी पर आक्रोश की खिंची रेखाएँ, ओठों पर खेलती मोहक मुस्कान, मन में आकाश छूने वाली तरंगें, अनुभव विहीन मस्तिष्क में विश्वास पूरित ऊहा कुछ गुनगुनाहट, कुछ खिलखिलाहट, कुछ तरंगें, कुछ उमंग, कुछ मोहक सपने, कुछ विद्वेश से भरी खीझ, इन्द्र धनुषी रंगों में खोई, डूबी कुछ कल्पनाएँ, कुछ दिवानगी भरे कदम इन सबको मिलाकर एक शब्द में कहा जाये तो वह है युवा अवस्था। मादकता से पूरित अल्मस्त जवानी ये जीवन का सबसे मूल्यवान क्षण है। शबनम की तरह खूबसूरत परन्तु तुहिन बिन्दु सा ही क्षणिक।

युवा शरीर में नवीन ऊर्जा शक्ति का स्रोत इठलाता रहता है। इसमें सदा नूतन बिजलियाँ कौंधती रहती हैं, इसीलिए युवा कदमों को रोक पाना या दिशा दे पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। युवाओं की फड़कती शक्ति को सही मार्ग पर लाकर ही देश के भवन की भित्ति को सुदृढ़ किया जा सकता है। युवा स्वर जहाँ मादक और मोहक होता है वहीं वह विध्वंसक और विनाशक भी होता है। युवा जहाँ अनुसरण करने वाला दिवाना होता है वहीं वह परमपराओं और मर्यादाओं को तोड़ने वाला विद्रोही भी होता है।

आज का युवक पथभ्रान्त, आत्मग्लानि से खीझता, तोड़–फोड़ और विध्वंस से दहकता, नशे की लतों में डूबता, जीवन की समस्याओं से भागता, जमाने भर से शिकायत करता, कुंठाओं से भरा, अनुशासन और शीलवृत्त को भंग करता नजर आ रहा है। आज वह एक दोराहे पर खड़ा है जहाँ उसे राह नजर नहीं आ रही है। अश्लीलता की आग में उसका मन और मस्तिष्क झुलस रहा है। तहर–तरह के दुर्व्यसनों से उसका नैतिक पतन हुआ जा रहा है। आज आवश्यकता है उसे नैतिकता, संयम, अनुशासन और कर्त्तव्य बोध कराया जाये, आज आवश्यकता है नवभारत के निर्माण करने की। इसके लिए उन चरित्रवान बलिदानी वीरों की आवश्यकता है जो अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए कह सकें – वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम। हम तुझ पर बलिदान करने वाले हों, आन–बान–शान के प्रति चरित्र के तप से प्रदीप्त, श्रम की बूंदों से अभिशिक्त युवाओं से ही इस राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। इस विस्मृति के गर्त से अपनी महान संस्कृति को पुनर्जीवित करें। हम अपने ज्ञानी–विज्ञानी ऋषि–मुनियों की संस्कृति को जिसमें भौतिक सुख के साथ आध्यात्मिक आनन्द की संयुक्त धारा है उस भागीरथी को पुनः प्रवाहित करें। आज भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अज्ञान, अन्ध परम्पराएँ, दुराचार, अभाव, दानव फिर जाग उठा है। उससे इस देश को बचाना आज के युवा का ही कर्त्तव्य है। आज के युग में आय के साधन सीमित हैं। व्यय निरन्तर वृद्धि पर है। व्यक्ति अनुचित ढंग से धन की प्राप्ति में आचार भ्रष्ट हो रहा है। आज तन ढंकने से अधिक ऊपरी दिखावे पर खर्च होता है। विलासिता और मादकता पर अधिक खर्च हो रहा है। इसलिए युवाओं को ही संतोष और संयम सीखना पड़ेगा।

उठो! जागो! अपने देशवासियों को जगाओ। सूर्योदय से पूर्व ही अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर लो और अपने कर्म पथ पर अग्रसर हो जाओ। एक क्षण भी वृथा मत गंवाओ। यदि तुम आलस्य और प्रमाद में डूबे रहे तो सूर्य पश्चिम को चला जायेगा। तब तुमसे कुछ भी न हो सकेगा। उठो! अतीत को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालो और साहस पूर्वक अपने पवित्र संकल्प से शक्तिशाली वर्तमान को उज्जवल भविष्य की दौड़ में नियोजित करो।

मेरे देश के भावी कर्णधारों आगे बढ़ो। पुरानी अकर्मण्यता पर विजय प्राप्त करो। जहाँ परिवर्तन की आवश्यकता है, वहाँ परिवर्तन करो और जहाँ गति की आवश्यकता है वहाँ गति लाओ। निर्बाध गति से लक्ष्य की ओर बढ़ते जाओ–बढ़ते जाओ। जब तक सफलता तुम्हारे कदम न चूम ले। हमें अपने विगत के महान आदर्शों के अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा। हम वर्तमान समय के कायरतायुक्त विचारों को त्यागकर मातृभूमि के हित, राष्ट्रीय गौरव से ओत–प्रोत, आत्मविश्वास और समर्पण के भव्य भावों को अपने श्वांस–प्रश्वांस में बसाये हुए सच्चे जीवन्त युवक बनें। हमारे आदर्श हैं वे पूर्व पीढ़ी के लोग जिन्होंने देश की आजादी का युद्ध लड़ा था वे भी युवक थे जिन्होंने फांसी के फंदों को देखकर मस्ती भरे गीत गाये थे। जिन्होंने राष्ट्रयज्ञ में अपने तन की समिधा जलाई थी, उन्होंने आजादी की पूर्वा हवा हमारे लिये बहाई जिससे हम सुखपूर्वक सांस ले सकें। आज फिर देश की एकता और अखंडा पर चोट पड़ रही है, आज फिर भारत माता के शरीर पर घाव उकेरे जा रहे हैं, आर्य वीर देश की आजादी के लिए लड़े, चाहे वह भगत सिंह थे या रामप्रसाद बिस्मिल अथवा चन्द्रशेखर आजाद या मदन लाल ढींगरा, सुभाष चन्द्र बोस या अशफाक उल्ला खाँ। वह चाहे लाजपत राय थे या श्यामजी कृष्ण वर्मा, चाहे वह दयानन्द जी थे या श्रद्धानन्द। आज उनके अनुयायियों को चाहिए कि वे राष्ट्रवादी युवकों का आह्वान करें जो देश से साम्प्रदायिक आग को मिटायें, देश के गद्दारों को सज़ा दें, भारत की शांति को दृढ़ करें, राष्ट्र की मुख्यधारा में सबको जोड़ सकें। वैसे भी युवा उम्र से नहीं होता। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के शब्दों में 'युवक कौन है?' बुजुर्गी की पहचान बुद्धि है उम्र नहीं। बूढ़े बेवकूफ भी होते हैं। उसी तरह जवानी की पहचान उम्र नहीं कुछ और है, हम उसे जवान नहीं कहते जिसकी उम्र 18 से 25 तक हो, जो सिर से पांव तक फैशन में सजा हुआ विलासिता का दास, जरूरतों का गुलाम, स्वार्थ के लिए गधे को बाप कहने के लिए तैयार हो वह न जवान है न बूढ़ा, वह मृतक है जिससे न तो मानवता का उपकार हो सकता है न देश का भला। हम जवान उसे कहते हैं जो 20 का हो या चार बीस का हो पर हो हिम्मत का धनी, दिल का मर्द, ऑन पर अपनी मर जाये पर किसी का एहसान न ले। सिर कटा दे, झुकाये नहीं, जो कठिनाईयों से डरे नहीं, बाधाओं से बचे नहीं बल्कि उनमें कूद पड़े। 6 महीने का सुगम मार्ग न चलकर 6 दिन का जान जोखिम का मार्ग पकड़े, नदी के किनारे नाव के इंतजार में खड़ न हो अपितु उछलती लहरों पर सवार हो जाये। आज देश को ऐसे जवानों की आवश्यकता है।

करेला रक्तशोधक व डायबिटिज में फायदेमंद

करेला अपने आप में एक औषधि है। करेला खाने या उसका जूस पीने से आपके स्वास्थ्य में काफी फायदा होता है। यह आपका खून से लेकर लीवर तक ठीक रखता है। करेला चिकित्सीय औषधियों में भी काम में लाया जाता है, हालांकि यह टेस्ट में कड़वा और आंखों को नहीं सुहाता है। लेकिन रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से बहुत सी समस्याएं दूर होती हैं। कच्चे करेले का जूस बहुत फायदेमंद है क्योंकि इसमें सभी जरूरी विटामिन्स और एंटी–ऑक्सीडेंटस होते हैं जोकि शरीर को चाहिए।

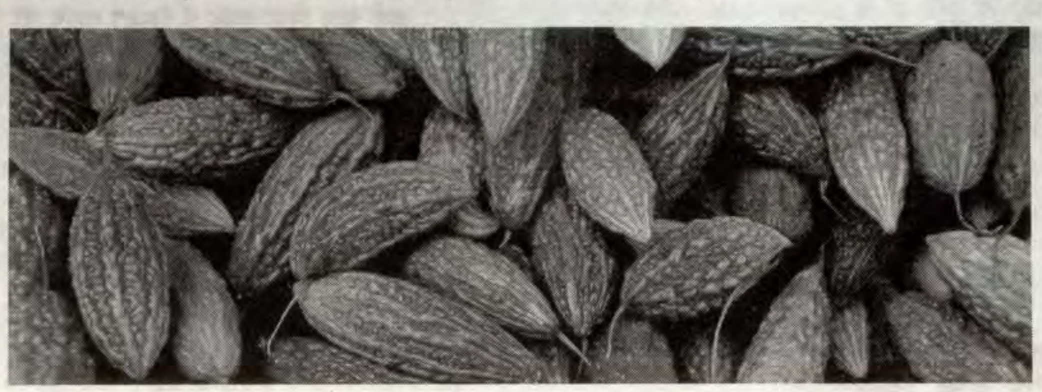

करेले के फायदे

1. ब्लड शुगर लेवल को कम करता है : शुगर को नियंत्रित करने के लिए आप तीन दिन तक खाली पेट सुबह करेले का जूस ले सकते हैं। मोर्मसीडिन और चैराटिन जैसे एंटी हाइपर गलेसेमिक तत्त्वों के कारण करेले का जूस ब्लड शुगर लेवल को मांसपेशियों में संचारित करने में मदद करता है।

2. बीजों में पॉलीपेप्टाइड–पी :– इसके बीजों में पॉलीपेप्टाइड–पी होता है जोकि इंसुलिन को काम में लेकर डायबिटिज रोगियों में शुगर लेवल को कम करता है।

3. भूख बढ़ाता है :– भूख नहीं लगने से शरीर को पूरा पोषण नहीं मिल पाता है जिससे कि स्वास्थ्य से संबन्धित परेशानियाँ होती है। इसलिए करेले के जूस को रोजाना पीने से पाचन क्रिया सही रहती है जिससे भूख बढ़ती है।

4. अग्नाशय के कैंसर के उपचार में उपयोगी :– रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से अग्नाशय का कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाएँ नष्ट होती है। ऐसा इसलिए होता है कि करेले में मौजूद एंटी कैंसर काम्पोनेंटस अग्नाशय का कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं में ग्लूकोस का पाचन रोक देते हैं, जिससे इन कोशिकाओं की शक्ति खत्म हो जाती है और ये भी खत्म हो जाती है।

5. सोराइसिस के लक्षणों को दूर करता है :– एक कप करले के जूस में एक चम्मच नींबू का जूस मिला लें। इस मिश्रण का खाली पेट सेवन करें। तीन से छह महीने तक इसका सेवन करने से त्वचा पर सोराइसिस के लक्षण दूर होते हैं। यह आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है और सोराइसिस को प्राकृतिक रूप से ठीक करने में मदद करता है।

6. लीवर से विषैले पदार्थ निकालता है :– रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से लीवर मजबूत होता है क्योंकि यह पीलिया जैसी बीमारियों को दूर रखता है। साथ ही यह लीवर से जहरीले पदार्थों को निकालता है और पोषण प्रदान करता है जिससे लीवर सही काम करता है और लीवर की बीमारियाँ दूर रहती है।

7. पाचन शक्ति बढ़ाता है :– करेले का जूस कमजोर पाचन तंत्र को सुधारता है और अपच को दूर करता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह एसिड के स्राव को बढ़ाता है जिससे पाचन शक्ति बढ़ती है। इसलिए अच्छी पाचन क्षमता के लिए सप्ताह में एक बार सुबह करेले का जूस जरूर लें।

8. आँखों की रोशनी बढ़ाता है :– लगातार करेले का जूस सेवन कर आप विभिन्न दृष्टि दोषों को दूर कर सकते हैं। करेले में बीटा–कैरोटिन और विटामिन–ए की अधिकता होती है, जिससे दृष्टि ठीक होती है। इसके अलावा इसमें उपस्थित विटामिन–सी और एंटी ऑक्सीडेंटस, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस से हाने वाली नजरों की कमजोरी से बचाता है।

9. ब्लड साफ करता है :– करेले का जूस शरीर में एक प्राकृतिक रक्तशोधक के रूप में कार्य करता है। यह जहरीले तत्त्वों को बाहर निकालता है और फ्री रेडिकल्स से हुए नुकसान से बचाता है। इसलिए ब्लड को साफ करने और मुहासों जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए रोज एक गिलास करेले का जूस जरूर पियें।

भारतीय संस्कृतिरक्षणे गुरुकुलानां योगदानम्

– डॉ. मंजूनाथ एस.जी.

गतांक से आगे

चेतसः आत्मनो वा संस्करणं संस्कृतिरित्यभिधीयते। इयं च संस्कृतिः संस्कारेभ्यो जायते। 'संस्कारो नाम विहितक्रियाजन्य अतिशयविशेषः। शास्त्रकारैः संस्कार शब्दस्यार्थमेव वर्णितो दृश्यते। यथा –

1. संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते।
2. संस्कारो नाम स भवति यस्मिंजाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य।
3. संस्कारो हि गुणाधानेन वा स्याद् दोषापनयनेन वा। इति।

संस्कारः मनसः मलं व्यापनयति। तथा चेतसः चांचल्यनिवारणमात्मन अज्ञानवारणंच करोति। एतादृशसंस्कारः गुरुकुलादिपवित्रक्षेत्रात्, श्रेष्ठव्यक्तीनां साहचर्यादागच्छति। गुरुकुले छात्राणां मार्गदर्शक आचार्य भवति। कीदृशोऽयामचार्य इत्युच्यते –

स्वयमाचरते यस्मादाचारं स्थापयत्यपि।
आचिनोति च शास्त्रार्थान् स नियमैर्युत।।

इति गुरुं छात्रा अनुसरन्तीति, गुरुकुले आचार्याणामेतादृशाचरणेनैव छात्राः शिक्षिताः भवन्ति।

शिष्टाचार :– गुरुकुले कश्चन शिष्टाचारः भवति। यथा गुरोः प्रवेशानन्तरं तस्यानुमयनन्तरमुपवेशनम्, गुरोरभिवादनमित्यादिः। तदुक्तम् 'आस्यतामिति चोक्तः यन्नासीताभिमुखं गुरोः' नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसन्निधौ इति।

ज्येष्ठानां सम्मानेन छात्राणां मनसः अहंकारः निर्गच्छति। किच्च –

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य बर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

पर्यावरणशिक्षा – प्राचीनकाले गुरुकुलं नगराद्बहिः रमणीयपरिसरे प्रकृतावासीत्। तत्र वासादेवा पर्यावरणज्ञानं भवति। प्रकृतेः महत्त्वच्च ज्ञायते। शकुन्तलायाः पतिगृहसमये कण्वमहर्षिः कथयति–पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वसिक्तेषु या, नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्। आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्याः भवत्युत्सवः, सेयं यादि शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।

अनेन वचनेन आश्रमवासिशकुन्तलायाः पर्यावरणविषये प्रीतिः आदरः मैत्री च कथमासीदिति ज्ञायते। वेदेषु इयं पृथिवी आराधिता। यथा –

उपस्थास्ते अनवीमा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।।

अर्थात् हे मातृभूमे! तव सेवका वयं नीरोगाः स्याम, त्वदुत्पन्ना भोगा अस्मभ्यं भवेयुः वयं ज्ञानिनो भूत्वा दीर्घायुषः स्याम, तव सुरक्षार्थं वयं स्वबलिदानार्थं सन्नद्धाः स्याम इति। किच्च,

आधारबन्धप्रमुखप्रयत्नैः संवर्धितानां सुतनिर्विशेषम्
कश्चिन्न बाधादिरुपप्लवे वा श्रमच्छिदात्रमपादपानाम्।।

इति राजा रघुः वरतन्तुमहर्षेराश्रमवृक्ष सुरक्षां प्रति समुत्सुकाः पृच्छति। एतादृशः मनोभावः प्रकृतिमध्ये विद्यमानगुरुकुले अधीतस्य भवितुमर्हति।

सामाजिकी भावना – गुरुकुले ब्रह्मचारिणः भिक्षाटनार्थं प्रतिग्राममटन्ति स्म। किच्च, समिधार्थसरण्ये भ्रमन्ति स्म। अनेन कारणेन सामाजिकी भावना संवर्धितासीत्। क्रमशः

आर्य समाज दनकौर के तत्वावधान में तथा पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के सान्निध्य में

चतुर्थ राजसूय चतुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन

दिनांक 28 जुलाई से 25 अगस्त, 2018 तक

कार्यक्रम स्थल : गुरु द्रोणाचार्य मंदिर, दनकौर, गौतमबुद्धनगर (उ. प्र.)

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज दनकौर के तत्वावधान में आर्य उपप्रतिनिधि सभा गौतमबुद्धनगर के सान्निध्य में गुरु द्रोणाचार्य मंदिर, दनकौर में दिनांक 28 जुलाई, 2018 से 25 अगस्त, 2018 तक महर्षि दयानन्द वेद संस्थान का चौथा राजसूय यज्ञ चतुर्वेद पारायण पाठ व प्रवचनों सहित हो रहा है। जिसका मूल उद्देश्य संसार के संशय भ्रमित ज्ञान को मिटाकर वेद का निशंक, निर्भ्रम उपयोगी सत्य ज्ञान देकर संसार का कल्याण करना है। आपसे निवेदन है कि कार्यक्रमानुसार अपने इष्ट मित्रों तथा सम्बन्धियों के साथ पधारकर वेद के धर्मात्मा विद्वान व विदुषियों के प्रवचनों से लाभ उठायें। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 7.30 से 10.30 बजे तक तथा सायं 3.30 से 6.00 बजे तक यज्ञ का कार्यक्रम चलेगा। शंका समाधान व शास्त्रार्थ का समय दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक रखा गया है। निश्चित विभिन्न विषयों पर प्रतिदिन शंका निवारण व शास्त्रार्थ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी गुरुकुल मुरसदपुर, मुख्यअतिथि स्वामी कर्मवीर जी महाराज तथा अन्य विद्वानों के प्रवचन प्रतिदिन कार्यक्रमानुसार होंगे।

इस अवसर पर स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी चन्द्रदेव जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी, आचार्य जयेन्द्र कुमार गुरुकुल नोएडा, आचार्य जय कुमार मंझावली, डॉ. धीरज सिंह तथा श्री अनिल आर्य आदि गणमान्य महानुभाव पधार रहे हैं।

शास्त्रार्थ की चुनौती

सत्य–सनातन वेद को असत्य व नूतन सिद्ध करना और किसी दूसरे ग्रन्थ को सत्य और सनातन सिद्ध करने वाले व्यक्ति को निर्णायक मण्डल द्वारा विजयी घोषित होने पर महर्षि दयानन्द वेद संस्थान के अध्यक्ष शास्त्रार्थ महारथी श्री महेन्द्र सिंह आर्य द्वारा 5 लाख का इनाम प्रदान किया जायेगा।

कार्यक्रम प्रचारक
श्री महेन्द्र सिंह आर्य

यज्ञ व्यवस्थापक
श्री देवमुनि जी

नोट : शास्त्रार्थ नियमों तथा अन्य जानकारी के लिए आयोजकों से सम्पर्क करें।

आयोजक : आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गौतबुद्धनगर (उ. प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 9720130413, 8006008822, 9627371868, 9811415453, 9810728821, 9818664888, 9818084674

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

प्रकाशन की तिथि : 9 अगस्त, 2018 वैदिक सार्वदेशिक
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मिलकर चलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
–ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः–संवननः।। देवता–संज्ञानम्।। छन्दः–अनुष्टुप्।।

विनय–हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर–समान मन और ज्ञानवाले होकर ही–अपने कार्य–भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखो, अग्नि–वायु आदि देव जगत्–संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने–अपने भाग को ठीक–ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण–इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा–प्राण–मन–हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव–पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी–बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि–स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों–करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों–करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन–सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार–अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो! मिलो, मिलो! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ–हे मनुष्यो! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 4100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।